ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27	अंकः 5	बुलेटिन अवधिः 17–21 जनवरी, 2018	दिनः मंगलवार	दिनाँकः 16 जनवरी, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	17–01–2018	18–01–2018	19–01–2018	20–01–2018	21–01–2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	19	19	18	16	17
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	6	5	4	5	4
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	मध्यम बादल	घने बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	85	85	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	40	45	45	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	004	006	006	006
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (09 से 15 जनवरी 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही घने बादल छाये रहे व 0.0 मिमी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 14.6 से 21.4 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 1.3 से 9.7 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- सरसों में चित्रित बग के नियत्रण हेतु डाई क्लोरवॉस 76 ई0सी0 का 627 मिली/हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे।
- सरसों में माहु का प्रकोप होने पर थियामेथोक्जाम 25 डब्लूएसजी 50–100 ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे। इसकी प्रतीक्षा अवधि 21 दिन है।
- दिसम्बर मे बोई गई गेहूँ की फसल में 20–25 दिन पर सिंचाई करें तथा नत्रजन की बची हुई 1/3 मात्रा का सिंचाई के बाद प्रयोग करें।

- दलहनी फसलो में, क्यूजानफॉप पी–मिथाइल (टर्गा सुपर) 5 ई0 सी0 की 1 ली0 मात्रा को 700 ली0 पानी में घोल बनाकर बुवाई के 15–20 दिन बाद छिड़काव करें।
- दलहनी फसलों में खरपतवार नियंत्रण हेतु अगर मजदूर उपलब्ध हों तो पहली निराई, बुवाई के 20–25 दिन बाद और दूसरी 35–40 दिन बाद करें।
- गेहूँ की फसल में चौड़ी पत्ति एवं घास वर्ग के खरपतवार के नियंत्रण हेतु वेस्टा की 400 ग्रा0 मात्रा का 700 ली0 पानी मे घोल बनाकर 1 हेक्टेयर में बुवाई के 30–35 दिन बाद छिड़काव करे।
- गेहूँ की फसल में खरपतवार के नियंत्रण हेतु, टोटल (या सल्फोसल्फोरॉन एवं मेटसल्फयूरॉन मिथाईल) की 40 ग्रा0 मात्रा को 700 ली0 पानी में घोलकर बनाकर 25–30 दिन बाद/हेक्टेयर में छिड़काव करे।
- शरदकालीन गन्नें की फसल में यदि श्रमिक उपलब्ध हों तो फावड़े से एक गहरी गुड़ाई करने के उपरांत सिचांई करके अनुमोदित मात्रा की लगभग 40 कि0ग्रा0/है0 की दर से एक चौथाई नत्रजन (लगभग 82 कि0ग्रा0 यूरिया/है0) का प्रयोग करें।
- पेड़ी वाले गन्नें की फसल में 60 कि0ग्रा0 नत्रजन, 60 कि0ग्रा0 फास्फोरस एवं 40 कि0ग्रा0 पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से नमी की उपस्थिति में प्रयोग कर अच्छी तरह से मिट्टी में मिला दें तथा खरपतवारों के नियंत्रण के लिए गन्ने की सूखी पत्तियों को गन्ने की दो कतारों के बीच में मोटी परत बिछाने से मृदा में नमी बनी रहती है तथा खरपतवारों का नियंत्रण भी होता है। जिन किसानों को पेड़ी गन्ने की फसल लेनी है उनकी कटाई मध्य फरवरी में ही करें।
- आवश्यकतानुसार फसलों में निराई गुड़ाई, सिंचाई एवं पोषक तत्वों का प्रबन्धन करें।
- सरसों में पत्ती धब्बा रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- पाला/कोहरा पड़ने की स्थिति में समय–समय पर सिंचाई करें।

उद्यान प्रबन्धः

- मटर में पौधों की सूखने एवं निचली पत्तियां पीले पड़ने की अवस्था में कार्बन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें ।
- मटर की गुड़ाई के पश्चात् हल्की सिंचाई करे।
- उॅचे क्षेत्रो में आलू की फसल हेतु उन्नतशील किस्मो जैसे कुफरी ज्योति, शैलजा, कुफरी हिमालिनी, कुफरी गिरधारी के बीज की व्यवस्था करे साथ ही साथ आलू वाले खेतो की जुताई कर साफ सुथरा रखें।
- मटर के निचली पत्तियो के पीले धब्बे दिखाई देने पर, मैंकोजेब 2.5 ग्राम प्रति ली0 या साइमोकजेनिल 8 प्रतिशत + मैंकोजेब 64 प्रतिशत के मिश्रण को 2.5 ग्राम प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- प्याज और लहसुन की पत्तियॉ उपर से पीली पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल या टेबूकोनाजोल का 1 मिली0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- आलू एवं टमाटर की फसल में पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्रा0/ली0 या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करे।
- टमाटर में पीलापन लिए हुए भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गोभी वर्गीय सब्जियो में पत्ती धब्बा रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- सही संस्थाओ से टमाटर, बैगन, शिमला मिर्च की उन्नत किस्मो का बीज क्रय नर्सरी में बुवाई करे।
- पाले से बचाव हेतु पौधशाला को सफेद प्लास्टिक से इस तरह ढकें कि सूर्य की रोशनी के साथ–साथ हवा का संचार भी हो सके (जमीन से 1 मीटर उपर)।
- पूर्व में आरक्षित किये शीतोष्ण फल वृक्षो जैसे सेब, नाशपाती, खुबानी, अखरोट आदि फल वृक्षो को लगाने का कार्य प्रारम्भ करे।
- शीतोष्ण फल पौधो के थाले बनाये तथा गोबर, नत्रजन एवं फास्फोरस की उचित मात्रा का प्रयोग करे।
- सेब में कैंकर रोग की रोकथाम के लिए कटाई छटाई के उपरान्त कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 0.3 प्रतिशत का प्रयोग करे। कटाई छटाई के दौरान रोगी एवं कीट ग्रसित अथवा अवांछनीय शाखाओ को काटकर कीटनाशक तथा फफूंदी नाशक रसायनो का छिडकाव करे।
- सेब तथा गुठलीदार फलों में तना विगलन रोग की रोकथाम के लिए प्रभावित सेब तथा गुठलीदार फलों के तनों के चारों तरफ मिट्टी हटाएँ जिससे धूप की किरणें ग्रसित भाग पर पड़े। प्रभावित छालों को हटाकर इसमें चौबटिया पेस्ट लगाकर मिट्टी से ढक दें। इसके अलावा 0.3 प्रतिशत कॉपरऑक्सीक्लोराइड की प्रति पौधा से ड्रैंचिंग करें।

❖ ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में सेब, नाशपाती, आड़ू, प्लम, खुमानी आदि शीतोष्ण फल वृक्षों में कटाई–छटाई शुरू करें।
❖ सेब एवं अन्य गुठलीदार फल पौधों को आगामी शीतऋतु में रोपण हेतु लेआउट तथा गढ्ढों की खुदाई का काम प्रारंभ करें।

पशुपालन प्रबन्धः

❖ सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें।
❖ पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए जिससे उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें।
❖ पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
❖ ठंड में पशुओं के आहार में तेल और गुड़ की मात्रा बढ़ा दें। अधिक ठंड की स्थिति में पशुओं को अजवाइन और गुड़ दें।
❖ पहाड़ी क्षेत्रों में पशुशाला में गर्मी हेतु हीटर का उपयोग करें। तथा अंगेठी का उपयोग धुंआँ निकलने के बाद कर सकते हैं।
❖ मुर्गियों के आवास के तापमान का अनुरक्षण करें।
❖ पशुओं को धान की कन्नी आहार के रूप में दें। जिससें उन्हें उर्जा और गर्मी मिलती है।
❖ इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
❖ जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
❖ भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविट्लूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

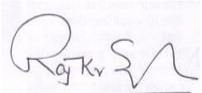

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर